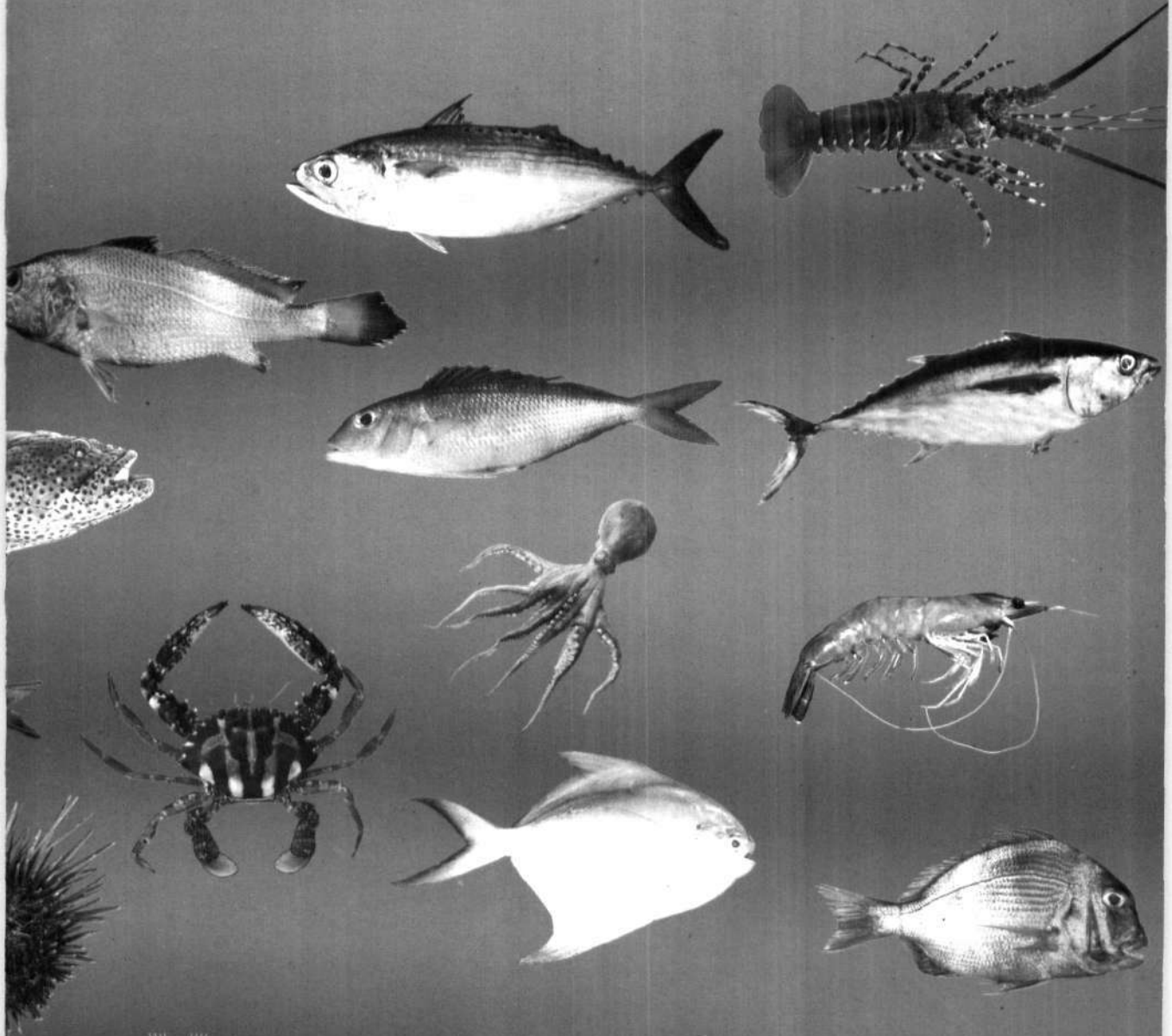


# मत्स्यगंधा

## 2002



केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

डाक संख्या 1603, टाटापुरम डाक, कोचीन 682 014, भारत



## झींगा उत्पादन और खाद्य सुरक्षा

मिरियम पॉल

सी एम एफ आर आई का विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र, विशाखपट्टणम

1996 में हुए विश्व भोजन शिखर सम्मेलन में खाद्य सुरक्षा को रेखांकित करते समय कहा गया था "... हर व्यक्ति को, हर समय, आवश्यक, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन शारीरिक और आर्थिक तौर पर उनके भोजनात्मक आवश्यकताओं व क्रियात्मक और तन्दुरुस्त जीवन के लिए उपलब्ध हो।" भारत की वर्तमान स्थिति इस आदर्श से बहुत दूर है। हमारी जनसंख्या का एक अहम विभाग दरिद्र रेखा के नीचे है। भारत के अनुमानित 90 लाख मछुओं में अधिकांश लोग, इस विभाग में शामिल हैं, खासकर लघु पैमाने के मत्स्यन में लगे हुए पारम्परिक मछुवारे।

पोषण के तौर पर, झींगा, प्रोटीन का एक मूल्यवान स्रोत है। लैसीन, बहु असंतृप्त वसा (Polyunsaturated fats) मिनरेल व धातु जैसे लघु तत्व भी झींगा मांस में उपलब्ध है। इसे जानवर प्रोटीन से ज्यादा पौष्टिक माना जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर झींगे के अधिकतम दाम में बिकने पर यह भोज्य आर्थिक और पौष्टिक तौर पर गरीबों के हाथ से बाहर हो गया है। अतः झींगा, भोज्य सुरक्षा के एक प्रत्यक्ष मार्ग से परोक्ष मार्ग बन गया। 1970 व 80 के दशकों के पूर्व जब झींगा मत्स्यन और कृषि की इतनी वृद्धि नहीं हुई थी तब झींगा दरिद्र मछुवारों के भोज्य का एक घटक था जो मत्स्य के समान दर्जे में खाया जाता था। जबसे झींगा एक उच्च श्रेणी का विदेशी मुद्रा शकल बना, तबसे वह एक अप्राप्त विलासप्रिय भोजन वस्तु बन गया है। अतः झींगे के बड़े वर्ग, जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में उच्च श्रेणी में बिकते हैं, देशीय आन्तरिक बाजारों से और आम लोगों के भोजनरीति से गायब हो गए हैं। यद्यपि हमारी समुद्री मत्स्यन झींगा मत्स्यन की तरफ पूर्णाभिमुखता दिखाता है तथापि इसके फसल का एक छोटा भाग ही स्थानीय

व्यापार में आता है। झींगा कृषि से उपलब्ध पैदावार का भी यही हाल है।

फलस्वरूप, झींगा मत्स्यन व कृषि का खाद्य सुरक्षा से प्रत्यक्ष तालुक सीमित है। परन्तु, तत्कालीन समुद्री मत्स्यन के बदलती प्रवणताओं की जाँच पर यह साफ होता है कि झींगों के बड़े वर्गों को पकड़ते वक्त निर्यात के लिए, अनुचित वर्ग भी, बड़े पैमाने में बटोरे जा रहे हैं। ये वर्ग स्थानीय बाजारों में बिकाऊ हैं। इनका दाम भी आम जनता के पहुँच में है। भविष्य में यह तटीय इलाकों के जनों में भोजन सुरक्षा का एकमात्र साधन बनेगा।

झींगा मत्स्यन व कृषि का परोक्ष प्रभाव, खाद्य सुरक्षा पर अवश्य पड़ता है। सूक्ष्म - आर्थिक दर्जे पर झींगा मत्स्यन या कृषि, इसमें शामिल लोगों के लिए आर्थिक समृद्धि लाती है। इस आर्थिक समृद्धि पर भोजन सुरक्षा आधारित है। परन्तु याथार्थ्य यह है कि ज्यादातर उपजीविका दर्जे पर रहते मछुवारों को इससे कोई लाभ नहीं मिलता लेकिन मध्यवर्तियों को इससे काफी मुनाफा हुआ है। उनकी भोजन सुरक्षा अवश्य बढ़ी है। झींगा व्यवसाय में सबसे ज्यादा मुनाफा बड़े पैमाने के संनिवेशकों को मिलता है। ये भोजन सुरक्षा समस्या के कल्पना - क्षेत्र में नहीं पड़ते।

एक और परोक्ष मार्ग से, झींगा निर्यात भोजन सुरक्षा में योगदान देता है। झींगा द्वारा प्राप्त विदेशी मुद्रा से राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति का सुधार होता है। बृहत आर्थिक दर्जे पर इन कमाइयों का एक हिस्सा उचित दाम या साहाय्यप्राप्त खाद्यवस्तु के रूप में भोज्य से असुरक्षित और पोषण की कमी से पीड़ित लोगों के लिए नियोजित किया जा सकता है।

पर्यावरण सुधार समितियाँ झींगा मत्स्यन और कृषि के खिलाफ अनेक मुद्दे उठाते हैं। इनमें से कुछ वास्तविक रूप के हैं। अर्ध - गहन झींगा कृषि में अपनाए गए कुछ रीतियाँ पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं। जलाशयों का मलनीकरण और मैंग्रोव वनों के नष्ट होने से स्थानीय लोगों के लिए लघु पैमाने का मत्स्यन व जीवनमार्ग नष्ट होता है। इससे भोजन सुरक्षा पर प्रत्यक्ष असर पड़ता है। उपजाऊ जमीन को झींगा खेतों में परिवर्तित करने पर और उसके श्रम विस्तार होने पर भी भोजन सुरक्षा पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु यह उसी माहौल में प्रचलित है जहाँ अयोजनाबद्ध परिवर्धन हुआ हो या झींगा कृषि करने की रीति में अप्रबन्ध हुआ हो। खासकर परम्परागत और विस्तृत कृषि रीतियों में यह समस्याएँ सीमित हैं। चावल-व-झींगा कृषि रीति या बहु संवर्धन संक्रियाओं में उपलब्ध साधन - स्रोत का महत्तम उपयोग होता है। आजकल के सोच में मैंग्रोव वनों में झींगा खेतों की स्थापना करना अनुचित माना जाता है, बल्कि झींगा खेतों के आसपास मैंग्रोव वनों को पुनःरोपित किया जाता है।

इसी तरह झींगा वर्गयुक्त ट्रांलर मत्स्यन एक रूप में हानिकारक बताया जाता है क्योंकि इसमें झींगों के अलावा अन्य जीवों के बहुत बड़ी संख्या की उपपकड (बैकेच) के रूप में मत्स्यन के दौरान समुद्र में ही फेंका जाता है। ट्रांलरों पर सुविधाओं की वृद्धि से इस मसले का हल काफी हद तक हो सकता है। इस बैकेच को तट तक लाकर स्थानीय बाजारों में बेचा जा सकता है या इससे मत्स्य आहार बनाया जा सकता है। इस सम्मिश्र मामले को सुलझाने के लिए प्रभावी मत्स्यन प्रबन्ध आवश्यक है।

ऐसा एक यथार्थ झींगा व्यवसाय प्रवणता से जारी है

कि इसमें धनीय संनिवेशक और भी मुनाफा कमाया करते हैं जब कि मुख्य उत्पादक जीवन - निर्वाह तल पर ही रह जाते हैं। उपभोक्ता या व्यापारी झींगा उत्पादन के सामूहिक या पर्यावरणिक कीमतों को नहीं चुकाते। इस भूमिका को बदलकर इनसे योगदान करना अनिवार्य बना देना जरूरी है। ऐसी नीतियाँ बनाई जानी चाहिए जिनसे इसे किसी कर के रूप में कायम किया जाए। इस कर से उपलब्ध पूँजी को पर्यावरण प्रत्यर्पण व निर्धन मछुवारों के उद्धार के लिए लगाया जाना चाहिए।

निर्यात मूल्य और प्रभार के भौतिक अनुमान से यह जाहिर होता है कि 1970 - 92 के बीच परुष कवचियों के असली कीमत में 29% की घटौती हुई है। इस अधोमुखी प्रवणता के बढ़ने की आशंका है। अन्य शब्दों में झींगों का उत्पादन बढ़ गया है पर प्रति टन का मूल्य गिर रहा है। निर्यात बाजार बहुत नाजुक भी है। अकसर झींगा व्यवसाय में निरोधों और कीमत कटौती के कारण भारी नुकसान झेलना पड़ता है। फलस्वरूप, हमें नए पश्च पैदावार प्रौद्योगिकी को उपयोग में लाकर आन्तरिक व्यापार को बढ़ावा देना चाहिए। केवल निर्यात पर आधारित झींगा व्यापार के अलावा आन्तरिक झींगा व्यापार को राष्ट्रीय तौर पर बढ़ावा मिलने से विश्व मंच पर भी भारत एक स्थायी दर्जे पर खड़ा हो सकता है। आर्थिक मुनाफा और भोजन सुरक्षा का अनुगमन इससे होगा।

अन्त में ऐसी नियमों और नीतियों की सख्त जरूरत है जिससे झींगा निर्यात से प्राप्त बड़े मुनाफों का कुछ हिस्सा इस उद्यम में शामिल सबसे निचले दर्जे के मछुवारों तक पहुँचा जाए। यही इनके खाद्य सुरक्षा और उद्धार का मूलाधार रहेगा।